

ST. MARY'S
1870

1870

महाराष्ट्र राज्य

व्यवसाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ४

नमो

(४)

पद्मनाभस्तु

आर्य समाज

नेम्ये १०१३

ASHA ARCHIVES

न पूर्वमनिधाय नो रुतवृधमंगलं न पश्चात्कान् शुक्रं न
ननु दकि त्वं वृधं ॥ ॥ अनिधाय त्वा मवात्र पूर्वमनि
मम अ ॥ वृध वा न मंगल वा न ॥ उरु व अनमम अ ॥ आदि
ए वा न शुक्र वा न पश्चिम अनमम अ ॥ वृहस्पति वा न
दकि अनमम अ ॥ धर्मं च कार्यं वा अनमम अ ॥ ० ॥

हं नमः श्रीपद्मनृपसूत्राय ॥

॥ जाक ॥ गज ॥ ना अं ८

ॐ अ३० नकुंनिकुअ॥५॥

॥ नमो ॥ गाय

२ ना अ न क अ उ क उ ना अ उ उ अ ॥ दि मि ३

ॐ ह्रीं व ३ च ह्रीं ॐ धा जि न कु नां ॐ नादि न दे

दि न य ढ न ॐ । नां दि थ थ ॐ ॐ द ॐ ष न दि त

नक्रां० ॥ ॥ आ० सा० ॥ इति गणपतं न

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५ वा. वा. ६ वा. ॥ च ॥ चि ॥ उद्वगच्छ वाग
धन दत्तं गङ्गा न किञ्चि ॥

चद॥ गंगा अगतिः ॥ अगतिः ॥ अगतिः ॥ अगतिः ॥ अगतिः ॥

[illegible]

त्रं ध्रुमुक् ४ धगसि दिगि २ थ क दिगि ४
दिगि द ध ध ठ क ध जि द ठं ध ॥ ॥
क ३ ॥ ना ना ध नागसि ना किं २ ध नागसि ना क द
ध न ध नं ध गसि दिगि २ ना ध गसि दिगि ना
४ दिगि ना ना ना ४ ठं ध ठं ना ध ॥ ॥

च दं ॥ च ॥ ध ध सि जिगि २ न क नि क धा ॥ ॥
ना न सि द ना ॥ ॥ न ह ॥ ज ध ३ ना क ठ न क ध धू ज
ज ना ध २ ज ज ध ना ध ज ज ध न गसि दिगि ना
२ दिगि ४ ना ना ध ठं ध ना ध ना ध ॥ क ३ ॥ द
द ध ना ३ ध ना जिगि द ध क ध जि द ठं ध

३॥ ॥ गत्रयः ॥ व ॥ न कृ नां ग ध क ध ना
क ट ना अ दि गि ना म अ दा ३ अ अ अ दि गि
ना ॥ व २ ह ॥ ध ध ग ध क ध उ न क ध उ
मि उ उ उ म ध ॥ ॥ गत्रयः ॥ व २ ह ॥
ल नां अ क २ ल नां अ ॥ अ अ अ ना अ ॥

द अ हा य ॥ आ ॥ वां ॥ ग हा ध ना जि मि ५ ठं
ध ना जि न ध ना ध ग ४ ॥ वां ॥ ग हा ना
अ ३ ना अ न क अ उ न ना अ उ २ अ ॥ ध ग ॥
वां ॥ च का त ॥ द द उ नां मि २ गु गु द ध ॥ मां
ध ध २ ध ध न द नि नां न ध जि ध ॥ वां

नददि २ नद निमां न क ध न द दि न द निनां ध.
ग ध उं न क ध सिं जि गि ४॥ ॥ वा ॥ न द दि २ न
द दि न द निनां सिं २ सिं दं ३ ध. ॥ जिं द ध रा सिं
२ दं ३ ध ॥ ॥ मा न ज प ॥ व ह ॥ ता अ अ दा उं अ अ
दा, ता अ. ता अ. दा अ ॥ मा मा ध रा ग सिं मा किं २ च क ध

त्रि कं मा किं २ ध रा जि दं ३ जि दं ३ ध रा जि दं ३ उं ता
मा अ उं ता अ ॥ ॥ मा २ ध जि दं. न २ ध जि नं. ता २ ध
२ र ना ॥ ॥

धनश्चित्रिधनश्च

धनश्चित्रिधनश्च

86.6-12410

SEATING: 1000

卷之四

Abbas bin Ali

86:6-10		86:6-10
----------------	--	----------------

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ कर्मसिद्धिस्तु ॥ ४॥

याथा नः शिवाय त क यि न य न व त म् क्वा ता अ न्द व
म न्द स्या सि द्ध य त कं स न मि ह स न दां सर्व सा के क व र ध
वि जि त्यां सं कृ म् न न म् वि म ति स दा ना ल ता अ न वा धि
न वं द म् क्वा सि हं स न व न ना म नं बृ ह्मा दि स व र ध ॥

१ॐ नमः शिवाय क द द द द ॥ अ थ च मा ॥ स्व स्ति वा च न
य व स कं क लं क श्या न ॥ ॐ न न अ य अ म् क्वा मा स अ म्
क य अ अ म् कं ति थो अ म् क्वा वि ग मी स वि न य अ म् क
ना हि ग र च द म सि वि सि द्ध या न न द य द स्या य हि य
व कि वा क्वा न गं ग म् लु ल वि स म वि हि न य व्वा न म म्

निसंकल्पा ॥ १ ॥ स्वकलया कल्याणायाममयादिन्या
संविक्षाय अष्टदलवटका लवटु संवित्रिणा स्वसं
धाम्ना नमस्कृत्यादीक्षय ॥ नवधाम्ना नवद्वारं जान
कनयनादधाना यस्तु चमालिं कालखत्रयां सर्वेषां
कविर्ह्येति नाकिनां चतुदक्षयमायना सतविज्जन

यनयां ॥ १ ॥ देवसमाधिनां सदाधिपतिनायात्र कृयाद्
वृजमानां रुक्म्यायमरुमात्रिभ्यथा कृया नक
त्वा ॥ ३ ॥ संकटादवी नमः ॥ ४ ॥ साननयः क्षयवात्र
सयं शक्तुमिय ॥ १० ॥ यथा ॥ ३ ॥ गुत्रुत्वा नमः ॥ ३ ॥ गल
वनयनमः ॥ ३ ॥ संकटाय नमः ॥ ३ ॥ ३ ॥ किं संकटं न

गंमयनमं नाडाय २ स्वादा ॥ नत्वया ॥ उं श्रीनात्रकड
वाच ४ केगाय वामान्त्रयुसर्वरु सुयदायक ४ ज्ञाया गानि
सुयस्थानि ४ गानित्वत्य सादना ॥ १ ॥ नगृकिमधिगः
कामुनव वामुननच उद संकंमदायाह संकटाद्यानम
रुमंशा २ ॥ ॐ गिगसायशुत्वा ऊं ठाय आठवित

रु संकटं वृनाठनं सागुशुनूदवधिसरुम ॥ ३ ॥
दायप्रदुयूत्रावृळु अष्टया अयूधिसिष्टत्र जगृरिसदि
त्वया जानिर्वदंयप्रमंगत ॥ ४ ॥ नदानिष्टननकाशी
यत्रा जगामरुमनि ४ माकंलुगिद्विद्याम ४ स रुठिदेर्म
रानया ॥ ५ ॥ गंष्टृष्टाचसमूहयधमयूनायूधिसि

प्रथमार्कः शुभमनिरुक्तायुलियरुस्युडवैता ॥ ५
॥ माकः लुयावचिडाऊनकप्रणाद्वृमानसु किमर्थ
मानप्रदन सनस्वमानवादनता ॥ १ ॥ युधिधिप्रद
वाचः संकटं ममदुःखायमानद्वृद नंरानक्षत्र
निवाप्रणायायंकं विवृमदामून ॥ ६ ॥ अवि

उवाचः आनन्दकानन्यद्वीसंकटानामविशुभा
विप्रसन्नारुप्रणाद्वृदवाचः प्रवृत्त ॥ ७ ॥ शु
ननामाद्वृकं नस्यामर्षिसिद्धिकर्जं नृणांसंकटायुथमना
मिदनीयं वीजयानथा ॥ १० ॥ ह्यनियं कामदायाकं
वृद्धं दूःखदायिनि सर्वगायकर्मनामवष्टुं काया

यानि गथाः ॥ ११ ॥ सकर्मसि मनयना गर्वनाम द्वाय
मं नामासु कर्मिंदं यत्पुत्रसंश्रयार्थं यानि गं ॥ १२ ॥
यय ॥ नया थय दू वायीन नामूत्र तस्य कटाट ४ ०० यः
का रुद्रिष्टु सनशा य वा ना नीसय यो ॥ १३ ॥ ०० तिन
यस्य वचशुत्वा नात्र दाह यतिरुत्र न तु संयुक्तं नां क

वी वि चस्य प्रसमावृता ॥ १४ ॥ रुद्रा रुद्र दशा संयुक्ताः
लावन नय रुद्रि नां माला कर्मसु प्रयुगां यम शं यगदा
रुगा ॥ १५ ॥ विष्णु प्रउम प्रधनाय न न क विरुद्रि नां
नतश्च रुद्र कला ना यन मा विधि नद न ॥ १६ ॥ वा न
नयं गृहि लाडु न ना वीर्य प्रययो या विरुद्रि नाय न दू

स्वा. संकटाय ऊयं नमः ॥ १५ ॥ चतुर्लोकं यथि स्वा. उ.
मूकान् संकटात् नमः ॥ चतुर्लोकं यथि स्वा. उ.
द्वेनां ॥ १६ ॥ संकटं नाहानं चेतुः प्रियं लाकयु वि
शुभं नवयति च. ययत्त नमदा वच्चा यत्ति रुम् ॥

१७ ॥ नित्यं यद्यपि ज्ञानं जीवन्मायकं लुप्यं
वा द. श्रीसंकटात् नमः ॥ १८ ॥ शुभं नमः
लं चंद्रं स विदा कालं शुभं ॥ १९ ॥